पाठ–4

बिहारी

कवि परिचय

जन्म– 1595 ई.

मृत्यु– 1663 ई.

हिन्दी की रीति काव्यधारा के अन्तर्गत उसकी भाव–धारा को आत्मसात् करके भी प्रत्यक्षतः आचार्यत्व न स्वीकार करने वाले मुक्त कवि बिहारी का जन्म ग्वालियर में हुआ था। ये अनेक राजाओं के आश्रय में रहे तथा उनसे वृत्ति प्राप्त करते थे। जयपुराधीश महाराजा जयसिंह के विशेष कृपापात्र थे। जिनसे इन्हें पर्याप्त पुरस्कार तथा काली पहाड़ी गाँव की जागीर प्राप्त हुई थी।

दोहा छन्द की लघु काव्य गागर में अर्थ गाम्भीर्य का सागर भर देने वाले बिहारी बहुज्ञ थे। इन्हें लोक ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, रीति, श्रृंगार, प्रेम ज्योतिष, भक्ति, नीति सम्बन्धी कई व्यावहारिक तथ्यों की अनुभूति थी । हिन्दी में समास पद्धति की शक्ति का परिचय सबसे अधिक बिहारी ने दिया है। बिहारी प्रतिभा सम्पन्न थे, पर प्रतिभा का उपयोग चमत्कार और अनुभूति दोनों के लिए किया। अलंकार के उदाहरणों के रूप रचना न करके भी अलंकार की काव्योपयोगिता पर बराबर दृष्टि रखी है। इन्होंने केवल शुष्क कथन द्वारा नीति की युक्ति नहीं बाँधी, अपितु बराबर किसी ऐसे दृष्टान्त या युक्ति से काम लिया, जो उस तथ्य की सार्थकता प्रमाणित करने में सहायक हो । परवर्ती साहित्य में सतसई परम्परा का प्रसार और बिहारी सतसई पर लिखी टीकाएँ बिहारी काव्य कला की पुष्टता को प्रमाणित करते हैं।

कृतियाँ

सतसैया' जो 'बिहारी सतसई' के नाम से संकलित हो प्रचलित है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत संकलन में बिहारी के नीति और भक्ति सम्बन्धी दोहे हैं। नीति के दोहों में जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। इनमें जीवन की उपयोगिता की महत्ता, परोपकार, नाम से अधिक गुण का वैशिष्ट्य, अहंकार से बचाव, प्राकृतिक स्वभाव की अपरिवर्तनीयता, सुख–दुःख में समरसता, विनम्रता, व्यर्थ की प्रशंसा से बचाव, सम्पत्ति का दुष्प्रभाव, दुष्टों का आदर, समय का बदलाव आदि का ज्ञान सूक्ष्मता, सरलता और सहजता से मिलता है।

बिहारी की विशेषता है कि वह अपनी बात को स्पष्ट करने के साथ प्रामाणिक बनाने के लिए उद्धरण या दृष्टान्त का प्रयोग करते हैं, जिससे वह दोहा जीवन्त हो जाता है। उनके भक्ति सम्बन्धी दोहों में कवि ने मतवाद का खण्डन करते हुए सच्चे मन से ईश्वर का भजन करने के लिए कहा है। बिहारी के दोहों में भाव–पूर्णता, संक्षिप्तता, अनुभूति की गहनता आदि विशेषताएँ विद्यमान हैं। इनकी शैली में मौलिकता भावों की अनूठी अभिव्यक्ति, भाषा की अर्थ गम्भीरता एवं चित्रांकन क्षमता अवलोकनीय है।

अति अगाधु अति औथरौ, नदी कूप सर बाय ।
सो ताकौ सागरू जहाँ, जाकी प्यास बुझाय ।।1।।
स्वारथु सुकृतु न श्रमु वृथा, देखि बिहंग बिचारि ।
बाज पराएँ पानि परि, तूँ पंच्छीनु न मारि ।।2।।
कनक कनक तैं सौगुनौ, मादकता अधिकाय ।
वा खाए बौरातु है, इह पाए बौराय ।।3।।
कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ ।
जगत तपोवन सौ कियो, दीरघ दाघ निदाघ ।।4।।
कौटि जतन कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहि बीच ।
नल–बल जलु ऊँचों चढ़ै, तऊ नीच को नीच ।।5।।
गुनी–गुनी सबकैं कहैं, निगुनी गुनी न होतु ।
सुन्यौं कहूँ तरु अरक तै, अरक समान उदोतु ।।6।।
दीरघ साँस न लेई दुख, सुख साई नहिं भूलि ।
दई–दई क्यौं करत है दई दई सु कबूलि ।।7।।
नर की अरु नल–नीर की, गति एकै करि जोय ।
जेतौ नीचो ह्वै चलै, ते तौ ऊँचौ होय ।।8।।
बड़े न हूजै गुननु बिनु बिरद बड़ाई पाय ।
कहत धतूरे सौं कनकु गहनौ गढ़्यौ न जाय ।।9।।
बढ़त–बढ़त संपति सलिलु, मन–सरोज बढ़ि जाय ।
घटत–घटत सु न फिरि घटै, बरु समूल कुम्हिलाय ।।10।।
बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु ।
भलौ–भलौ काहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु, दानु ।।11।।
मरत प्यास पिंजरा–परयौ, सुवा समय कै फैर ।
आदर दे दे बोलियत, बायस बलि की बैर ।।12।।
सीस मुकुट, कटि–काछनी, कर–मुरली, उर–माल ।
इहिं बाविक मो मन सदा बसौ बिहारी लाल ।।13।।
मेरी भव–बाधा हरौ राधा नागरि सोय
जा तन की झाईं परै श्याम हरित दुति होय ।।14।।
मोहन मूरति स्याम की अति अद्‌भुत गति जौय ।
बसति सु चित–अंतर तऊ प्रतिबिंबित जग हौय ।।15।।

शब्दार्थ–

अगाध–गहरा, कनक–सोना, धतूरा,
विरद–पदवी, औथरा–उथला,
अहि–सर्प, सुवा–तोता,
सर–सरोवर, निगुनी–गुणहीन,
बायस–कौआ, बाय–बावड़ी,
अरक– सूर्य, आकड़े का पौधा,
बाविक–स्वरूप, सुकृत–सद् कर्म,
विहग– पक्षी, दई–दई– ईश्वर, दिया हुआ ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बिहारी के अनुसार संसार किसे प्राप्त कर मदमस्त हो जाता है?

क) धतूरे को ख) शराब को
ग) स्वर्ण को घ) सम्मान को

2. नल, नीर और नर की समानता से बिहारी ने क्या सन्देश दिया है ?

क) समान गति से चलना ख) विनम्र बनना
ग) नीचे ही रहना घ) धीरज रखना

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. 'खोटैं ग्रह जपदान' पंक्ति से बिहारी ने किस मनोभाव को प्रकट किया है?
4. श्री कृष्ण के किस रूप को कवि अपने मन में बसाना चाहता है?
5. संसार को तपोवन क्यों कहा गया है?
6. बिहारी प्रकृतिगत स्वभाव को अपरिवर्तनशील क्यों मानते हैं??

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7. निम्न पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–

क) वा खाए बौरातु हैं, इहिं पाए बौराय।
ख) सुन्यौ कहूँ तरु अरक तै, अरक समानु उदोतु।
ग) सौ तोको सागरू जहाँ, जाकी प्यास बुझाय।
घ) बढ़त बढ़त सम्पति सलिलु, मन–सरोज बढ़ि जाय।

8. निम्न की व्याख्या कीजिए–

क) दीरघ साँस न लेई दुख.....सु कबूलि।
ख) अति अगाधु..... प्यास बुझाय।

9. निम्न शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए –

कनक–कनक, दई–दई, अरक–अरक.

निबन्धात्मक प्रश्न

10 बिहारी ने नीति सम्बन्धी संकलित दोहों में जीवन के किन–किन आदर्शों को प्राप्त करने के लिए लिखा है ? विभिन्न उदाहरणों का उल्लेख कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1 – (ग)

2 – (ख)